

डॉ. रॉबर्ट ए. पीटरसन, मोक्ष, सत्र 18, संरक्षण और दृढ़ता, भाग 2, व्यवस्थित सूत्रीकरण

© 2024 रॉबर्ट पीटरसन और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. रॉबर्ट पीटरसन द्वारा मोक्ष पर दिए गए उनके उपदेश हैं। यह सत्र 18, संरक्षण और दृढ़ता, भाग 2, व्यवस्थित सूत्रीकरण है।

हम उद्धारशास्त्र का अपना अध्ययन जारी रखते हैं, विशेष रूप से परमेश्वर द्वारा अपने लोगों को सुरक्षित रखना, अपने संतों को सुरक्षित रखना, या, जैसा कि प्यूरिटन कहते हैं, संतों के साथ परमेश्वर की दृढ़ता, जो कि संतों के प्रति उनकी दृढ़ता का आधार है।

परमेश्वर के गुण संरक्षण पर एक और दृष्टिकोण प्रदान करते हैं। पवित्रशास्त्र परमेश्वर की संप्रभुता, न्याय, शक्ति, विश्वासयोग्यता और प्रेम को परमेश्वर के अपने लोगों की रक्षा या संरक्षण में कार्य करते हुए चित्रित करता है। यही हमारी रूपरेखा है।

परमेश्वर की प्रभुता, न्याय, शक्ति, विश्वासयोग्यता और प्रेम काम पर लगाए जाते हैं। परमेश्वर अपने गुणों को हमारे लिए काम पर लगाता है ताकि हम बच सकें। पौलुस परमेश्वर की प्रभुता को विश्वासियों के अंतिम महिमा के भरोसे का आधार मानता है।

रोमियों 8:28 से 30 में हम जानते हैं कि जो लोग परमेश्वर से प्रेम रखते हैं, उनके लिये सब बातें मिलकर भलाई ही को उत्पन्न करती हैं; अर्थात् उन्हीं को जो उसकी इच्छा के अनुसार बुलाए हुए हैं। क्योंकि जिन्हें उसने पहले से जान लिया है, उन्हें पहले से ठहराया भी है कि उसके पुत्र के स्वरूप में हों, कि वह बहुत भाइयों में पहिलौठा ठहरे। और जिन्हें उसने पहले से ठहराया है, उन्हें बुलाया भी है।

जिन्हें उसने बुलाया, उन्हें धर्मी भी ठहराया। जिन्हें उसने धर्मी ठहराया, उन्हें महिमा भी दी। रोमियों 8, 28 से 30।

क्रिश्चियन स्टैंडर्ड बाइबल भाइयों शब्द को लेकर उसे भाई और बहन बना देती है, जिसे मैं बहुत ही वैध अनुप्रयोग मानता हूँ। मुझे नहीं पता कि मैं बाइबल का इस तरह से अनुवाद करूँगा या नहीं, क्योंकि कभी-कभी इसमें वास्तव में बहनें भी लिखी होती हैं, लेकिन इनमें से ज़्यादातर अंशों में ऐसा नहीं है। परमेश्वर उन लोगों के जीवन में आने वाली हर चीज़ को स्वतंत्र रूप से बनाता है जो उससे प्यार करते हैं, उसके लोग, यहाँ तक कि दुख भी, उनके अंतिम भले के लिए काम करते हैं।

पौलुस इस कथन को इस बात की पुष्टि करके पुष्ट करता है कि परमेश्वर ने हमारे सर्वोत्तम भले के लिए कार्य किया है। परमेश्वर ने अपने लोगों से प्रेम किया, उन्हें चुना, उद्धार के लिए बुलाया, धर्मी घोषित किया, और उन्हें महिमा दी। हालाँकि महिमा का वर्णन युग के अंत तक नहीं होगा, प्रेरित

ने इसका वर्णन करने के लिए उसी भूतकाल का उपयोग किया है जैसा कि उसने उद्धार के अन्य भूतकाल, उद्धार के अन्य पिछले पहलुओं का वर्णन करने के लिए किया है।

परमेश्वर के लोग पहले से ही महिमावान हैं। म्यू ने विश्वासियों की महिमा की आशा के पीछे परमेश्वर की संप्रभुता की प्रबल भावना को दर्शाया है। म्यू, रोमियों को पत्र, पृष्ठ 3536।

वह लिखते हैं, और ऐसा इसलिए है क्योंकि यह हमारे लिए परमेश्वर की योजना है, जिन्हें बुलाया गया है और जो इस प्रकार परमेश्वर से प्रेम करते हैं, इसलिए हम निश्चित हो सकते हैं कि सभी चीजें भलाई की ओर योगदान देंगी, पद 28, हमारे प्रत्येक मामले में उनकी योजना की प्राप्ति। प्रत्येक विश्वासी में परमेश्वर के उद्देश्य की प्राप्ति, पद 28, महिमा की आशा का आधार है। पौलुस विश्वासियों की महिमा को, पद 30, परमेश्वर के दृष्टिकोण से देख रहा है, जिसने पहले ही तय कर दिया है कि यह होना चाहिए।

हालाँकि अभी तक इसका अनुभव नहीं हुआ है, लेकिन धर्मी ठहराए गए लोगों को महिमा देने का ईश्वरीय निर्णय पहले ही हो चुका है। मुद्दा सुलझा लिया गया है। यहाँ, पौलुस उस आश्वासन के अंतिम स्रोत को छूता है जिसका मसीहियों को आनंद मिलता है, और इसके साथ, वह पद एक से निंदा न करने के अपने उत्सव को विजयी चरमोत्कर्ष पर लाता है जो मसीह में प्रत्येक व्यक्ति पर लागू होता है।

पौलुस परमेश्वर के न्याय को मसीह में मसीहियों को सक्रिय रूप से सुरक्षित रखने के रूप में भी प्रस्तुत करता है, रोमियों 8, 33-34। परमेश्वर के चुने हुए लोगों पर कौन आरोप लगाएगा? परमेश्वर ही है जो धर्मी ठहराता है। किसे दोषी ठहराना है? मसीह यीशु वह है जो मर गया, उससे भी बढ़कर, जो जी उठा, जो परमेश्वर के दाहिने हाथ पर है, जो वास्तव में हमारे लिए मध्यस्थता करता है, रोमियों 8, 33-34।

पौलुस सत्य को रेखांकित करने के लिए अलंकारिक प्रश्नों का उपयोग करता है। परमेश्वर और उसके लोगों के शत्रु, शैतान, दुष्टात्माएँ और मानव विद्रोही, हमारे विरुद्ध दोष के अनेक आरोप लगाते हैं। पौलुस का कहना है कि इनमें से कोई भी आरोप टिक नहीं पाएगा क्योंकि हमारा मामला पहले ही ब्रह्मांड के सर्वोच्च न्यायालय में जा चुका है, और न्यायाधीश, सर्वशक्तिमान परमेश्वर ने हमें धर्मी घोषित कर दिया है।

इस फैसले को कोई भी कभी नहीं पलट सकता, पद 33. यही सत्य पद 34 में भी व्यक्त किया गया है। पौलुस के अलंकारिक प्रश्न के बाद, जो कि निंदा करने से संबंधित है, वह मसीह यीशु का उल्लेख करता है।

पॉल के तर्क का अनुसरण करने के लिए, हमें यह जानना होगा कि धर्मशास्त्र के अंतिम निर्णय के आधे अंशों में पिता न्यायाधीश है, और दूसरे आधे अंश में पुत्र के लिए भी यही सत्य है। इसलिए पॉल इस प्रश्न का उत्तर यह कहकर दे सकता था कि, मसीह यीशु दोषी ठहराएगा। इसके बजाय, वह कहता है कि, मसीह मरा, जी उठा, परमेश्वर के दाहिने हाथ पर बैठा, और हमारे लिए प्रार्थना करता है।

उसका मतलब साफ है। बेटा, जो सारी धरती का न्यायकर्ता है, हमें दोषी नहीं ठहराएगा बल्कि बचाएगा। न्यायकर्ता मसीह यीशु हमारा उद्धारकर्ता है।

एक बार फिर, परमेश्वर का न्याय हमारे उद्धार को बनाए रखता है। परमेश्वर की शक्ति एक और दिव्य गुण है जो हमें विश्वास में बनाए रखता है। हम पहले ही देख चुके हैं कि यीशु अपनी भेड़ों को अपने हाथ में सुरक्षित रखने की अपनी शक्ति की पुष्टि करता है।

वह उन्हें कभी न खत्म होने वाले जीवन का उपहार देता है, पुष्टि करता है कि वे कभी नरक में नहीं जाएंगे, और फिर कहता है, उद्धारण, कोई भी उन्हें मेरे हाथ से नहीं छीन सकता, यूहन्ना 10:28। कार्सन अनंत जीवन का उल्लेख करता है और फिर सिर पर कील ठोकता है, उद्धारण, ध्यान जीवन की शक्ति पर नहीं, बल्कि यीशु की शक्ति पर है। कोई भी उन्हें मेरे हाथ से नहीं छीन सकता, न ही लुटेरा भेड़िया, पृष्ठ पद 12, न ही चोर और लुटेरे, पद 1 या 8, कोई भी नहीं।

यीशु की भेड़ों की अंतिम सुरक्षा अच्छे चरवाहे के हाथ में है। जॉन के सुसमाचार पर कार्सन की व्याख्यात्मक टिप्पणी जॉन 10:28 और उसके बाद के पदों में है। परमेश्वर की वफ़ादारी उसके लोगों की रक्षा करती है।

व्याख्यात्मक व्याख्या से पता चलता है कि यह बहुत हद तक सत्य है। मैं चार अंशों का निष्कर्ष निकालूंगा। पहला कुरिन्थियों 1:8, और 9. 1 थिस्सलुनीकियों 5:23, 24.

2 थिस्सलुनीकियों 3:3. 2 तीमुथियुस 2:13. पहला कुरिन्थियों 1:8, और 9. परमेश्वर तुम्हें अन्त तक दृढ़ भी करेगा, वह कुरिन्थियों से कहता है, ताकि तुम हमारे प्रभु यीशु मसीह के दिन में निर्दोष ठहरो। परमेश्वर विश्वासयोग्य है।

तुम्हें उसके पुत्र, हमारे प्रभु यीशु मसीह की संगति में बुलाया गया है। पहला कुरिन्थियों 1, 8, और 9। अब, शांति का परमेश्वर आप ही तुम्हें पूरी तरह से पवित्र करे। हमारे प्रभु यीशु मसीह के आने पर तुम्हारी पूरी आत्मा, प्राण और देह स्वस्थ और निर्दोष बनी रहे।

जो तुम्हें बुलाता है, वह सच्चा है, वह ऐसा करेगा। पहला थिस्सलुनीकियों 5, 23, 24। परन्तु प्रभु सच्चा है, वह तुम्हें दृढ़ करेगा और तुम्हें दुष्ट से सुरक्षित रखेगा।

2 थिस्सलुनीकियों 3:3. यदि हम अविश्वासी हैं, तो परमेश्वर विश्वासयोग्य बना रहता है, क्योंकि वह स्वयं का इन्कार नहीं कर सकता। 2 तीमुथियुस 2:13. हम इस सूची में परमेश्वर की विश्वासयोग्यता पर पाँचवाँ अंश जोड़ते हैं।

इसमें ये शब्द नहीं हैं कि परमेश्वर विश्वासयोग्य है, लेकिन फिर भी यह उस सत्य का एक शक्तिशाली साक्ष्य है। इब्रानियों के लेखक परमेश्वर के वादों की विश्वसनीयता के प्रमाण के रूप में उत्पत्ति 22:17 का हवाला देते हैं। मैं सचमुच तुम्हें आशीष दूंगा और मैं तुम्हें बहुत बढ़ाऊंगा, इब्रानियों 6:14 में, उत्पत्ति 22:17 का हवाला दिया गया है।

अब्राहम द्वारा इसहाक की बलि देने के बाद, परमेश्वर ने अपने पिछले वादे को दोहराया और शपथ के साथ उसमें कुछ और जोड़ दिया। सर्वशक्तिमान परमेश्वर ऐसा क्यों करेगा? इब्रानियों 6:17 और 18 इसका उत्तर देते हैं। इसलिए, जब परमेश्वर ने वादे के उत्तराधिकारियों को अपने उद्देश्य के अपरिवर्तनीय चरित्र को और अधिक स्पष्ट रूप से दिखाना चाहा, तो उसने शपथ के साथ इसकी गारंटी दी ताकि दो अपरिवर्तनीय बातों के द्वारा, जिनके विषय में परमेश्वर का झूठ बोलना असंभव है, हम जो शरण के लिए भागे हैं, उस आशा को थामे रहने के लिए दृढ़ प्रोत्साहन पाएँ जो हमारे सामने रखी गई है।

इब्रानियों 6:17, और 18. परमेश्वर की शपथ लेना इस तथ्य को रेखांकित करता है कि उसके दिव्य गुण, इस मामले में वफ़ादारी, उसे उसके वचन से बांधते हैं। मैं श्रद्धापूर्वक कहता हूँ कि परमेश्वर अपने वचन से पीछे नहीं हटेगा, वास्तव में नहीं हट सकता, क्योंकि उसने इसे दिया और, उद्धरण, शपथ के साथ इसकी गारंटी दी।

इब्रानियों 6:17. अब्राहम से किया गया उसका वादा अटल है। यह स्पष्ट है।

लेकिन यह तुरंत स्पष्ट नहीं है कि कैसे परमेश्वर का वादा वफ़ादार अब्राहम को आशीर्वाद देने और उन्हें गुणा करने का है, जो उनके सामने रखी गई आशा को दृढ़ता से थामे रखने के लिए मजबूत प्रोत्साहन देता है। श्लोक 18. संदर्भ पाठकों से आग्रह करता है कि वे उन लोगों का अनुकरण करें जो विश्वास और दृढ़ता के माध्यम से वादों को प्राप्त करते हैं।

6:12. और फिर पिता अब्राहम को उसी बात का एक बेहतरीन उदाहरण बताया गया है। धैर्यपूर्वक प्रतीक्षा करने के बाद, अब्राहम ने वादा प्राप्त किया।

पद 15. तो सवाल यह है कि: अब्राहम से परमेश्वर का वादा हिब्रू पाठकों को विश्वास में दृढ़ रहने के लिए कैसे प्रोत्साहित करता है? विलियम लेन सबसे अच्छा जवाब देते हैं। इब्रानियों 1 से 8. उनकी टिप्पणी। पृष्ठ 152. वर्ड बाइबिल टिप्पणी। यह एक अद्भुत टिप्पणी है।

शायद यह मेरा पसंदीदा है। मैं इसके हर पहलू से सहमत नहीं हूँ। हमारे पास एक अलग धार्मिक दृष्टिकोण है, लेकिन वाह, क्या शानदार काम है।

लेन कहते हैं कि इस व्याख्या का ध्यान कुलपति से हटकर मसीहियों पर केंद्रित हो जाता है, जिन्हें वादे के वारिस के रूप में नामित किया गया है। पद 12. मसीह के माध्यम से वादे विरासत में पाने वालों के रूप में, उन्हें बाइबल के विवरण की प्रासंगिकता की सराहना करनी चाहिए।

शास्त्र में जो कुछ दर्ज है, उसका उद्देश्य उन्हें इस बात पर दृढ़ विश्वास दिलाना है कि उनके लिए परमेश्वर का उद्देश्य भी अपरिवर्तनीय है। संदर्भ और पद 17 और 18 में ईसाई समुदाय पर ध्यान केंद्रित करने के मद्देनजर, अब्राहम को दिए गए वादे को मानना और शपथ के साथ पुष्टि करना उचित प्रतीत होता है, जो मसीह में नए वाचा के समुदाय को दिया गया है। उद्धरण बंद करें।

परमेश्वर ने एक शपथ लेने के लिए झुककर यह दर्शाया कि उसने अब्राहम से जो वादा किया था, उसे पूरा करने का उसका संकल्प क्या है। अब्राहम के आध्यात्मिक उत्तराधिकारियों के रूप में

परमेश्वर का उससे किया गया वादा हमारे आत्मविश्वास को मजबूत करता है कि वह हमारे लिए अपनी नई वाचा की प्रतिज्ञाओं को पूरा करेगा। परमेश्वर विश्वासयोग्य है, और उसका वादा और शपथ विश्वासियों को एक पक्की आशा देते हैं।

वास्तव में, यह आशा, उद्धारण, आत्मा का एक सुनिश्चित और दृढ़ लंगर है, एक आशा जो पर्दे के पीछे के आंतरिक स्थान में प्रवेश करती है जहाँ यीशु हमारे लिए एक अग्रदूत के रूप में गया है, इब्रानियों 6:19 और 20। परमेश्वर अपने लोगों को बचाने के लिए अपनी वफ़ादारी का और सबूत देता है जब वह यीशु, हमारे महान महायाजक के बारे में बताता है, जिसने हमें बचाने के लिए खुद को दे दिया और अब हमारी ओर से परमेश्वर की उपस्थिति में प्रकट होता है। परमेश्वर हमें बचाता है क्योंकि वह वफ़ादार है।

अंत में, परमेश्वर का प्रेम विश्वासियों को अंतिम उद्धार के लिए सुरक्षित रखता है। इस विषय पर टेक्सटस क्लासिकस रोमियों 8:35 से 39 है। पौलुस ने अलंकारिक रूप से पूछा कि मसीहियों को मसीह के प्रेम से क्या अलग कर सकता है।

फिर वह सात संभावित उत्तरों की गणना करता है और निष्कर्ष निकालता है कि कोई भी चीज़ हमें पद 36 में मसीह के प्रेम से दूर नहीं कर सकती। श्रृंखला में अंतिम तत्व, तलवार, निष्पादन द्वारा मृत्यु का प्रतीक है और यहां तक कि यह भी अपने लोगों के लिए परमेश्वर के प्रेम को, अपने लोगों के लिए अपने बेटे में परमेश्वर के प्रेम को निराश नहीं कर सकता। अगर कोई यह कहने की कोशिश करेगा, ठीक है, आप यहाँ धर्मत्याग कर सकते हैं, यह किसी तरह, आप व्यक्तिगत रूप से ऐसा कर सकते हैं।

ऐसा नहीं है, यहाँ पौलुस के शब्दों के साथ धर्मत्याग की संभावना को जोड़ने की कोशिश काम नहीं करती, उद्धारण, क्योंकि मैं आश्चर्य हूँ कि न तो ऊँचाई, न ही गहराई और न ही कोई अन्य रचनात्मक चीज़ हमें परमेश्वर के प्रेम से अलग कर पाएगी जो हमारे प्रभु मसीह यीशु में है, आयत 38, 39। पौलुस व्यापक दोहों का उपयोग करता है। किसी की मृत्यु और जीवन में सब कुछ शामिल है।

वर्तमान और भविष्य की चीज़ें सब कुछ कवर करती हैं। क्योंकि उद्धार के सबसे कमज़ोर सिद्धांत में भी अतीत की चीज़ें शामिल हैं। भगवान का शुक्र है, बाइबल के सिद्धांत में हमारे सभी पाप शामिल हैं।

आखिरी जयकार के तौर पर, पॉल ने उल्लेख किया कि कोई भी अन्य रचनात्मक चीज़ हमें परमेश्वर के प्रेम से अलग नहीं कर पाएगी जो हमारे प्रभु मसीह यीशु में है, श्लोक 39। इसमें हम और हमारी असफलताएँ शामिल हैं। त्रिएकत्व के प्रेम के कारण, हम मसीह में सुरक्षित हैं।

संरक्षण के लिए तीन तर्क हैं, तीन का आमतौर पर इस्तेमाल नहीं किया जाता। त्रिदेव, पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा हमें सुरक्षित रखते हैं। हमें सुरक्षित रखने के लिए परमेश्वर के गुण काम में लाए जाते हैं।

मसीह का कार्य। पवित्रशास्त्र मसीह के उद्धार कार्य को हमारे संरक्षण से जोड़ता है। यीशु ने हमें बचाने के लिए जो किया, उसके कारण हम उसमें सुरक्षित हैं।

हमारा बचाव उसके क्रूस, खाली कब्र, मध्यस्थता और वापसी पर आधारित है। बचाव यीशु के क्रूस पर चढ़ने पर आधारित है। रोमियों 5:19 में दो आदमों की तुलना करते समय पौलुस इस सत्य को व्यक्त करता है। क्योंकि जैसे एक मनुष्य की अवज्ञा से बहुत से लोग पापी ठहरे, वैसे ही एक मनुष्य की आज्ञाकारिता से बहुत से लोग धर्मी ठहरेंगे, रोमियों 5:19। आदम के आदि पाप के कारण एक आदम के विरुद्ध बहुत से लोग पापी ठहरे।

आदम की अवज्ञा के कारण उसकी सारी जाति परमेश्वर की दृष्टि में पापी बन गई। आदम के पाप के समानांतर, मसीह का मृत्यु तक, यहाँ तक कि क्रूस पर मृत्यु तक आज्ञाकारी बनना, उसके सभी लोगों के औचित्य का आधार है। पौलुस भविष्य काल का उपयोग करता है, धर्मी बनाया जाएगा, रोमियों 5:19, यह दिखाने के लिए कि मसीह का कार्य अभी और हमेशा के लिए औचित्य को पूरा करता है।

परमेश्वर अंतिम न्याय के समय मनुष्यों और स्वर्गदूतों के सामने विश्वासियों को धर्मी घोषित करेगा, क्योंकि मसीह हमारे उद्धारकर्ता ने हमें न्यायोचित ठहराने के लिए अपनी जान दे दी। पौलुस ने रोमियों 8:1-4 में बाद में अलग-अलग शब्दों में यही सत्य सिखाया। इसलिए, अब मसीह यीशु में रहने वालों के लिए कोई दण्ड की आज्ञा नहीं है, क्योंकि मसीह यीशु में जीवन की आत्मा की व्यवस्था ने तुम्हें पाप और मृत्यु की व्यवस्था से स्वतंत्र कर दिया है। क्योंकि जो काम व्यवस्था शरीर के द्वारा दुर्बल होने के कारण नहीं कर सकी, उसे परमेश्वर ने किया।

उसने पापी शरीर की समानता में अपने ही पुत्र को पापबलि के रूप में भेजकर शरीर में पाप की निंदा की ताकि व्यवस्था की माँग हम में पूरी हो जो शरीर के अनुसार नहीं बल्कि आत्मा के अनुसार चलते हैं, रोमियों 8:1-4। हालाँकि व्यवस्था खोए हुआओं को बचाने में असमर्थ थी क्योंकि लोग उसका पालन नहीं कर सकते थे, परमेश्वर ने उन्हें मसीह में बचाया। पिता ने अपने देहधारी पुत्र को पापबलि के रूप में भेजा, ताकि, उद्धारण, शरीर में पाप की निंदा की जा सके। मसीह हमारे स्थान पर मर गया, उस निंदा को लेते हुए जिसके हम कानून तोड़ने वाले हकदार थे।

और परिणामस्वरूप, अब विश्वासियों के लिए कोई निंदा नहीं है, पद 1। क्रूस पर यीशु की मृत्यु हमें बचाती है और हमें बचाए रखती है। संरक्षण यीशु के पुनरुत्थान में भी आधारित है। मेलमिलाप मसीह का बचाव कार्य है, जिसे ऐसा माना जाता है जो परमेश्वर के साथ हमारी शत्रुता को दूर करता है, जिससे हमारे बीच शांति स्थापित होती है।

रोमियों 5:10 को छोड़कर हर जगह इसका श्रेय मसीह की मृत्यु को दिया गया है। क्योंकि यदि बैरी होने पर भी उसके पुत्र की मृत्यु के द्वारा परमेश्वर से मेल मिलाप हुआ, तो मेल हो जाने पर उसके जीवन के द्वारा हम क्यों न उद्धार पाएंगे, रोमियों 5:10। पौलुस मसीह की मृत्यु और उसके जीवन दोनों का उल्लेख करता है। क्या वह इस प्रकार मसीह के मेलमिलाप की उपलब्धि को विभाजित करता है? इसका उत्तर है नहीं। बल्कि, वह चाहता है कि हम यह समझें कि मसीह की मृत्यु और पुनरुत्थान मिलकर उसके उद्धार कार्य का निर्माण करते हैं।

रोमियों 4:25, 6:5, 1 कुरिन्थियों 15:3 और 4 की तुलना करें। जो परमेश्वर के लोगों के बीच मेल-मिलाप कराने के लिए मरा, वह उन्हें मेल-मिलाप कराने के लिए हमेशा के लिए जीवित रहता है। इब्रानियों की चेतावनी वाले अंश बहुत प्रसिद्ध हैं। इसके संरक्षण वाले अंश उतने प्रसिद्ध नहीं हैं।

इब्रानियों 7:6, 17 से 20, क्षमा करें, और इब्रानियों 7:3 से 25. इब्रानियों 6:17 से 20, जिसे हम पहले ही देख चुके हैं. इब्रानियों 7:23, 25.

हमने पहले भाग का अध्ययन किया है और अब हम दूसरे भाग पर ध्यान देंगे। इब्रानियों 7:23, 25. अब, बहुत से लोग लेवी कुल के याजक बन गए हैं।

बहुत से लोगों पर जोर दिया जाता है क्योंकि मृत्यु के कारण वे पद पर बने रहने से वंचित रह जाते हैं। लेकिन क्योंकि वह हमेशा के लिए रहता है, इसलिए वह अपने पुरोहिताई को स्थायी रूप से धारण करता है। इसलिए, वह उन लोगों को पूरी तरह से बचाने में सक्षम है जो उसके माध्यम से परमेश्वर के पास आते हैं क्योंकि वह हमेशा उनके लिए मध्यस्थता करने के लिए जीवित रहता है।

इब्रानियों 7:23 से 25. लेवी के पुजारियों के विपरीत, जो मृत्यु तक सेवा करते थे और उनके स्थान पर एक वंशज को नियुक्त किया जाता था, क्रूस पर चढ़ाए गए और जी उठे यीशु मसीह के पास, क्रूस पर चढ़ाए गए और जी उठे के रूप में, एक अविनाशी जीवन की शक्ति है। इब्रानियों 7:16 . इसलिए, वह हमेशा के लिए एक पुजारी बना रहता है क्योंकि वह मृतकों में से जी उठा है और अपने पुजारी पद को स्थायी रूप से धारण करता है।

इब्रानियों के 7:24। यह उनके लोगों के लिए बहुत व्यावहारिक महत्व रखता है। उद्धरण, इसलिए, वह उन लोगों को पूरी तरह से बचाने में सक्षम है जो उसके माध्यम से परमेश्वर के पास आते हैं क्योंकि वह हमेशा उनके लिए मध्यस्थता करने के लिए जीवित रहता है।

पद 25. जी उठे मसीह हमारे महान महायाजक हैं, और इस तरह, उनका कोई उत्तराधिकारी नहीं है। वह पूरी तरह से बचाता है, जिसे अक्सर अस्थायी अर्थ में हमेशा के लिए लिया जाता है।

इसलिए, न्यू अमेरिकन स्टैंडर्ड बाइबल और कभी-कभी गुणात्मक अर्थ में पूरी तरह से। इसलिए, एनआईवी। लेकिन शायद इसका मतलब पूरी तरह से है, जो दोनों अर्थों को समाहित करता है, जैसा कि विलियम लेन ने अपनी इब्रानियों की टिप्पणी में तर्क दिया है।

यीशु की मृत्यु और पुनरुत्थान परमेश्वर द्वारा अपने संतों के संरक्षण का आधार है। समय के संदर्भ में, उसकी मृत्यु हमेशा के लिए बचाती है। यह पूरी तरह से बचाती है।

यह किसी भी तरह से पूरी तरह से बचाता है, जिसकी हम कल्पना कर सकते हैं। यह हमें हमेशा के लिए बचाने के लिए पर्याप्त है क्योंकि वह उन लोगों को पूरी तरह से बचाने में सक्षम है जो उसके माध्यम से परमेश्वर के पास आते हैं। वह ऐसा करने में सक्षम है क्योंकि वह हमेशा उनके लिए मध्यस्थता करने के लिए जीवित रहा है।

कूस पर चढ़ाया गया उद्धारकर्ता जीवित उद्धारकर्ता है जिसका पुनरुत्थान हमें किसी भी तरह से बचाता है जिससे उद्धार की कल्पना की जा सकती है, जिसमें स्थायी रूप से उद्धार भी शामिल है। संरक्षण यीशु की मध्यस्थता पर भी आधारित है। अभी-अभी पढ़ा गया अंश दोहरा कर्तव्य करता है।

यह न केवल यह दर्शाता है कि यीशु का पुनरुत्थान बचाता है, बल्कि उसकी मध्यस्थता भी। मसीह विश्वासियों को पूरी तरह से बचाता है, क्योंकि वह हमेशा उनके लिए मध्यस्थता करने के लिए जीवित रहता है। इब्रानियों 7:25। हमारे महान महायाजक की प्रार्थनाएँ हमें सुरक्षित रखती हैं क्योंकि वह हमारे लिए परमेश्वर की उपस्थिति में प्रकट होता है।

मैं जिस पुत्र का उद्धार दे रहा हूँ, उसका अविभाज्य जीवन उसकी निरंतर पुरोहितीय मध्यस्थता का आधार है। लेन फिर से। यीशु ने ल्यूक के सुसमाचार में अपनी मध्यस्थता वाली सेवकाई की भविष्यवाणी की है।

यीशु ने शिष्यों से कहा कि शैतान, यहूदा को यीशु को धोखा देने के लिए उकसाने के बाद, दूसरों की धोखाधड़ी को भी साबित करना चाहता है। यीशु ने पतरस से कहा, लेकिन मैंने तुम्हारे लिए प्रार्थना की, शमौन, कि तुम्हारा विश्वास कम न हो। और जब तुम वापस लौट आओ, तो अपने भाइयों को मजबूत करो।

लूका 22:32. पतरस ने मना कर दिया और यीशु के प्रति अपनी अटूट वफादारी का दावा किया, यहाँ तक कि मृत्यु तक। जवाब में, यीशु ने पतरस के तीन बार इनकार करने की भविष्यवाणी की। लूका 22:33-34. यीशु की पतरस के लिए की गई मध्यस्थता भरी प्रार्थना ने तीन बार इनकार करने के बाद उसके विश्वास को पूरी तरह से विफल होने से बचा लिया।

यह विफल तो हुआ, लेकिन पूरी तरह से नहीं। यूहन्ना 21 :15-19। हम पहले ही देख चुके हैं कि यीशु ने अपनी महायाजकीय प्रार्थना में तीन बार 11 लोगों के लिए प्रार्थना की। यह यूहन्ना 17:11;15:24 में है। पवित्र पिता, अपने उस नाम से उनकी रक्षा करें जो आपने मुझे दिया है ताकि वे एक हो जाएँ जैसे हम एक हैं।

यीशु यह प्रार्थना करते हैं। वह धरती पर रहते हुए भी अपने शिष्यों के लिए मध्यस्थता करते हैं, जो हमें इस बात का संकेत देता है कि वह स्वर्ग में हमारे लिए क्या कर रहे हैं। यूहन्ना 17:11. मैं यह प्रार्थना नहीं कर रहा हूँ कि आप उन्हें दुनिया से निकाल दें, पिता, बल्कि यह कि आप उन्हें दुष्ट से बचाएँ।

यूहन्ना 17:15. पिता, श्लोक 24, मैं चाहता हूँ कि जिन्हें तूने मुझे दिया है, वे जहाँ मैं हूँ, वहाँ मेरे साथ रहें, ताकि वे मेरी महिमा को देखें, जो तूने मुझे दी है, क्योंकि तूने संसार की उत्पत्ति से पहले मुझसे प्रेम किया है। यूहन्ना 17:24. हमने यह भी देखा है कि यीशु अपने लोगों की निंदा नहीं करेगा, बल्कि इसके विपरीत, मरता है, जी उठता है, और उनके लिए मध्यस्थता करता है। रोमियों 8:34. सुसमाचार और पत्रियों में, फिर, हम सीखते हैं कि यीशु अपने लोगों की ओर से उन्हें विश्वास में बनाए रखने के लिए मध्यस्थता करता है।

अंत में, हमारा बचाव यीशु की वापसी पर आधारित है। प्रेरित यूहन्ना ने यूहन्ना 14:2-3 में यीशु के उत्साहवर्धक शब्दों को दर्ज किया है। अपने दिलों को परेशान मत होने दो। परमेश्वर पर विश्वास रखो।

मुझ पर भी विश्वास करो। मेरे पिता के घर में बहुत से रहने के स्थान हैं। यदि न होते, तो मैं तुम से कहता कि मैं तुम्हारे लिये जगह तैयार करने जा रहा हूँ। यदि मैं जाकर तुम्हारे लिये जगह तैयार करूँ, तो फिर आकर तुम्हें अपने यहाँ ले जाऊँगा कि जहाँ मैं रहूँ, वहाँ तुम भी रहो।

यूहन्ना 14:2 और 3. यीशु अपने लोगों को स्वर्ग में पिता के पास ले जाने के लिए फिर से आने का वादा करता है। यीशु चाहता है कि जो लोग पिता और उस पर विश्वास करते हैं, वे पिता द्वारा स्वागत किए जाने की आशा करें। इन आयतों का तत्काल पूर्ववर्ती संदर्भ यहाँ संरक्षण के विचार को मजबूत करता है, क्योंकि 14:2 और 3 में यीशु के सात्वना भरे शब्दों को पतरस के तीन इनकारों, 13:37, और 38 की उनकी भविष्यवाणी के प्रकाश में देखा जाना चाहिए।

पतरस लड़खड़ा जाएगा, लेकिन यीशु ने ग्यारह यहूदा को आश्चस्त किया जो उसे धोखा देने के लिए बाहर गए थे कि वे पिता के हैं और उनके स्वर्गीय घर में उनके लिए जगह है। पतरस एक अलग तस्वीर पेश करता है लेकिन वही सच्चाई सिखाता है। उद्धरण 1 पतरस 1:13। इसलिए, अपने मन को कार्रवाई के लिए तैयार रखें, शांत मन से रहें और अपनी आशा पूरी तरह से उस अनुग्रह पर रखें जो यीशु मसीह के प्रकट होने पर आपको दिया जाएगा।

1 पतरस 1:13. पतरस अपने पाठकों को दूसरे आगमन की ओर संकेत करते हुए तैयारी और नैतिक संयम का आदेश देता है। यीशु मसीह का रहस्योद्घाटन उसके लोगों पर परमेश्वर के अनुग्रह की एक बड़ी वर्षा को दर्शाता है। यीशु मसीह के रहस्योद्घाटन पर आपको दिए जाने वाले अनुग्रह पर अपनी आशा पूरी तरह से टिकाए रखें।

यहाँ अनुग्रह का अर्थ है उद्धार की पूर्णता। इसमें परमेश्वर द्वारा अपने लोगों का संरक्षण शामिल है, क्योंकि वे अंतिम मुक्ति पाने में असफल नहीं होंगे। किस्तेमेकर बुद्धिमानी से बात करता है।

साइमन किस्तेमेकर, पीटर और जूड, पृष्ठ 59. न्यू टेस्टामेंट कमेंट्री में वह टिप्पणी, पीटर और जूड, जिसे सैम किस्तेमेकर ने विलियम हैंड्रिकसन से लिया था जब उनका निधन हो गया था। किस्तेमेकर कहते हैं कि जब यीशु नियत समय पर वापस आएंगे, तो वे अपने अनुयायियों को उनके उद्धार की पूर्णता प्रदान करेंगे।

जब वह प्रकट होगा, तो उसका उद्धारक कार्य सभी विश्वासियों में साकार होगा। वह उन्हें पाप से मुक्ति, शरीर और आत्मा की महिमा, और इस ज्ञान के माध्यम से पूर्ण उद्धार प्रदान करता है कि वह हमेशा उनके बीच रहेगा। हमने परमेश्वर द्वारा अपने संतों के संरक्षण पर बाइबिल की शिक्षा को संक्षेप में प्रस्तुत किया है।

त्रित्ववादी व्यक्तियों की भूमिकाएँ, ईश्वर के गुण, और मसीह का उद्धारक कार्य मिलकर उन सभी लोगों के अंतिम उद्धार को सुरक्षित करते हैं जो वास्तव में यीशु में विश्वास करते हैं। कैल्विन इस

सत्य से विश्वासियों को प्रोत्साहित करते हैं। कैल्विन के संस्थान, ईसाई क्लासिक्स संस्करण की मानक लाइब्रेरी, पुस्तक दो, अध्याय 15, श्लोक तीन और चार।

इसलिए, कैल्विन, जब भी हम मसीह के बारे में सुनते हैं कि वह अनंत शक्ति से लैस है, तो हमें याद रखना चाहिए कि चर्च की शाश्वतता इस सुरक्षा में सुरक्षित है। इसलिए, यह निष्कर्ष निकलता है कि शैतान, दुनिया के सभी संसाधनों के साथ, कभी भी चर्च को नष्ट नहीं कर सकता, क्योंकि यह मसीह के शाश्वत सिंहासन पर स्थापित है। इसी तरह, मसीह अपने लोगों को आत्माओं के शाश्वत उद्धार के लिए आवश्यक सभी चीजों से समृद्ध करता है और उन्हें आध्यात्मिक दुश्मनों के सभी हमलों के खिलाफ अजेय खड़े होने के साहस के साथ मजबूत करता है।

हमारा राजा हमें कभी भी बेसहारा नहीं छोड़ेगा, बल्कि युद्ध समाप्त होने तक हमारी ज़रूरतों को पूरा करेगा। हमें विजय के लिए बुलाया गया है। सुंदर शब्द।

दृढ़ता अगला कदम है। संरक्षण का अर्थ है परमेश्वर द्वारा अपने लोगों को बचाए रखना। परमेश्वर द्वारा अपने संतों का संरक्षण उनकी दृढ़ता से संबंधित है, अविभाज्य है।

क्योंकि वह उन्हें सुरक्षित रखता है, इसलिए वे विश्वास में बने रहते हैं। यह कथन उद्धार में ईश्वरीय संप्रभुता को रेखांकित करता है। शास्त्र वास्तविक मानवीय जिम्मेदारी भी सिखाता है।

और इसका मतलब यह है कि विश्वासियों को अंततः बचाए जाने के लिए विश्वास में दृढ़ रहना चाहिए। नए नियम का हर भाग अंतिम उद्धार के लिए दृढ़ता की आवश्यकता सिखाता है। लेकिन जो अंत तक धीरज धरता है, वह बच जाएगा, मत्ती 24:13।

उस नगर में सुसमाचार का प्रचार करने और बहुत से शिष्य बनाने के बाद, वे लुस्त्रा, इकुनियुम और अन्ताकिया लौट आए, और विश्वास में बने रहने के लिए प्रोत्साहित करके शिष्यों को मजबूत किया और उन्हें बताया कि परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करने के लिए कई कठिनाइयों से गुजरना आवश्यक है, प्रेरितों के काम 14:21 और 22। इब्रानियों 10:36, क्योंकि तुम्हें धीरज चाहिए, क्योंकि तुम्हें धीरज चाहिए, ताकि परमेश्वर की इच्छा पूरी करने के बाद, तुम प्रतिज्ञा की गई वस्तुएँ पाओ। प्रकाशितवाक्य 14:12, यह उन संतों से धीरज की माँग करता है जो परमेश्वर की आज्ञाओं और यीशु में अपने विश्वास को बनाए रखते हैं।

प्रकाशितवाक्य 14:12. परमेश्वर के लोगों को कम से कम तीन क्षेत्रों में अंत तक दृढ़ रहना चाहिए: विश्वास, प्रेम और पवित्रता। उन्हें अंत तक मसीह पर भरोसा करना जारी रखना चाहिए।

दूसरों से प्रेम करना, पवित्रता का अनुसरण करना। सबसे बुनियादी बात यह है कि विश्वासियों को मसीह पर भरोसा करना जारी रखना चाहिए। बाइबल सिखाती है कि मसीह में विश्वास का प्रारंभिक अंगीकार करना आवश्यक है, लेकिन पर्याप्त नहीं है।

सच्चे विश्वासी अंत तक यीशु पर भरोसा करते रहते हैं। यीशु द्वारा अपने मांस खाने और अपना लहू पीने के बारे में कुछ कठिन बातें कहने के बाद, जैसा कि यूहन्ना 6:66 में उद्धृत किया गया है, उसके कई शिष्य पीछे हट गए और उसके साथ नहीं गए। यूहन्ना 6:66.

जाहिर है, यहाँ शिष्य शब्द का इस्तेमाल व्यापक अर्थ में किया गया है। कुछ लोग जो यीशु के पीछे इसलिए चले गए क्योंकि उसने रोटी और मछली की मात्रा बढ़ाई थी, वे उसके कड़े शब्दों से नाराज हो गए और उसके पीछे नहीं चले गए। फिर यीशु अपने 12 शिष्यों से पूछते हैं, क्या तुम भी चले जाना नहीं चाहते? श्लोक 67.

वह अपने शिष्यों को प्रोत्साहित करता है, यहाँ इस शब्द का प्रयोग संकीर्ण अर्थ में किया गया है, ताकि वे उसके पीछे चलते रहने के अपने इरादे को स्वीकार करें। पतरस, हमेशा की तरह, उनके नेता, ऐसा करते हैं। प्रभु, हम किसके पास जाएँ? आपके पास अनन्त जीवन के वचन हैं।

हम विश्वास करने और जानने आए हैं कि आप परमेश्वर के पवित्र जन हैं, उद्धारण समाप्त करें। श्लोक 68 और 69। हमें पतरस का उत्तर बहुत पसंद आया।

वह परमेश्वर के पुत्र से संबंधित सभी रहस्यों को समझने का दावा नहीं करता। वह, अपने साथियों की ओर से, मसीह में विश्वास और अनन्त जीवन के बारे में जानने के लिए कहीं और जाने की निरर्थकता का दावा करता है। हे प्रभु, हम किसके पास जाएँ? आपके पास अनन्त जीवन के वचन हैं।

हम जानते हैं कि आप परमेश्वर के पवित्र जन हैं। पौलुस भी विश्वास में दृढ़ता की आवश्यकता सिखाता है। सृष्टि और छुटकारे में मसीह की श्रेष्ठता की पुष्टि करने के बाद, कुलुस्सियों 1:15 से 18 में, पौलुस यीशु को ईश्वर के अवतार और संपूर्ण सृष्टि के मेल-मिलापकर्ता के रूप में प्रस्तुत करता है।

कुलुस्सियों 1:19 और 20. फिर वह अपने पाठकों पर बाद वाली सच्चाई लागू करता है। उनके पापी जीवन ने उन्हें परमेश्वर से दूर कर दिया था, लेकिन मसीह ने उनके स्थान पर मरकर उन्हें परमेश्वर के साथ मिला दिया और उन्हें परमेश्वर के सामने पापरहित रूप में प्रस्तुत करेगा।

श्लोक 21 और 22. जैसा कि पहले उल्लेख किया गया है, पौलुस एक शर्त जोड़ता है। यदि आप वास्तव में विश्वास में दृढ़ और दृढ़ बने रहते हैं और आपने जो सुसमाचार सुना है उसकी आशा से विचलित नहीं होते हैं, तो आप अंततः बचाए जाएँगे।

यदि आप विश्वास में दृढ़ और दृढ़ बने रहते हैं और सुसमाचार की आशा से विचलित नहीं होते हैं, तो कुलुस्सियों को अंततः बचाए जाने के लिए मसीह पर प्रभु और उद्धारकर्ता के रूप में भरोसा करना जारी रखना चाहिए। उद्धार करने वाले विश्वास में केवल आरंभिक स्वीकारोक्ति ही शामिल नहीं है। इसमें सुसमाचार पर विश्वास करने में अंत तक दृढ़ता भी शामिल है।

इब्रानियों के लेखक ईसाई जीवन को एक तेज दौड़ के रूप में नहीं बल्कि एक लंबी दूरी की दौड़ के रूप में देखते हैं। अध्याय 11 में विश्वास के नायकों और नायिकाओं द्वारा प्रेरित, पाठकों को उत्पीड़न और अपने स्वयं के पाप से विचलित नहीं होना चाहिए, बल्कि उनके सामने आने वाली दौड़ को धीरज के साथ दौड़ना चाहिए। इब्रानियों 12:1। उनका अंतिम ध्यान यीशु पर ही रहना चाहिए, जो हमारे विश्वास का अग्रदूत और सिद्ध करने वाला है, जिसने अपने सामने रखे आनंद

के लिए लज्जा की चिन्ता न करते हुए क्रूस सहा, और परमेश्वर के सिंहासन के दाहिने हाथ पर बैठ गया।

इब्रानियों 12:2. हालाँकि वे कभी भी यीशु की तरह कष्ट नहीं उठाएँगे, फिर भी परमेश्वर उन्हें परमेश्वर की महिमा, परमेश्वर की महिमा और आनन्द के वादे के लिए अन्यायपूर्ण पीड़ा सहने में उसका अनुकरण करने के लिए बुलाता है। इब्रानियों के पाठकों के लिए एक अनन्त इनाम इंतज़ार कर रहा है अगर वे “थके हुए या दिल से निराश नहीं होते।” श्लोक 3. इसके बजाय, लेखक उनसे मसीह के लिए मरने की हद तक दृढ़ रहने की अपेक्षा करता है।

पद 4. तुम अभी तक अपने खून बहाने के लिए दृढ़ नहीं हो। विश्वासी होने का दावा करने वालों को विश्वास में दृढ़ रहना चाहिए, और सच्चे विश्वासी ऐसा करते हैं। मैं उन्हें व्यवस्थित करूँगा क्योंकि नीचे सनातन भुजाएँ हैं।

हम अंततः दृढ़ रहते हैं क्योंकि ईश्वर हमें सुरक्षित रखता है। लेकिन अब यह वास्तव में मेरा मुद्दा नहीं है। मैं एक तरह से व्याख्यात्मक या व्याख्यात्मक, अगर आप चाहें तो, धर्मशास्त्र कर रहा हूँ, दृढ़ता के बारे में बाइबल की समझ का निर्माण कर रहा हूँ, इससे पहले कि मैं इसे संरक्षण से जोड़ूँ।

विश्वासियों को सुसमाचार पर विश्वास करना जारी रखना चाहिए। विश्वासियों को दूसरों से प्रेम करना जारी रखना चाहिए। विश्वासियों को एक दूसरे से प्रेम करने के लिए आदेश और उपदेश नए नियम में आम बात है।

मत्ती 22:37 से 39. यीशु ने उससे कहा, हे व्यवस्थापक, जो यह समझता है, कि मैं ने व्यवस्था को पूरी रीति से माना है, तू अपने परमेश्वर यहोवा से अपने सारे मन, और सारे प्राण, और सारी बुद्धि के साथ प्रेम रख। यही बड़ी और मुख्य आज्ञा है।

दूसरी बात यह है कि अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रखो। मत्ती 22:37 से 39।

यूहन्ना 15:12. यीशु ने कहा, मेरी आज्ञा यह है, कि जैसा मैं ने तुम से प्रेम रखा, वैसा ही तुम भी एक दूसरे से प्रेम रखो।

रोमियों 12:10. एक दूसरे से भाईचारे की तरह गहरा प्यार करो। इब्रानियों 13:1. भाईचारे का प्यार बना रहे।

हम तीन ऐसे अंशों पर गौर करेंगे जो सिखाते हैं कि मसीहियों को एक दूसरे से प्रेम करना चाहिए। सबसे पहले, यीशु पुराने नियम की आज्ञा को दोहराते हैं कि अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम करो। लैव्यव्यवस्था 19:18.

एक नए स्तर पर। उन्होंने कहा, मैं तुम्हें एक नई आज्ञा देता हूँ कि तुम एक दूसरे से प्रेम करो। जैसे मैंने तुमसे प्रेम किया है, वैसे ही तुम भी एक दूसरे से प्रेम करो।

इसी से सब जानेंगे कि तुम मेरे चेले हो, यदि एक दूसरे से प्रेम रखोगे। यूहन्ना 13:34, 35. अपने पड़ोसी से प्रेम करने की आज्ञा को मसीही शास्त्र में भी पुष्ट किया गया है।

मसीह द्वारा अपने क्रूस पर प्रदर्शित प्रेम अन्य मसीहियों के प्रति हमारे प्रेम का लक्ष्य, प्रेरणा और माप बन जाता है। यह हमारा लक्ष्य है, और कौन दावा कर सकता है कि वह इसे प्राप्त कर चुका है? इस प्रकार यह हमें विनम्र बनाता है और हमें मसीही जीवन जीने के लिए ईश्वर की सक्षम कृपा की ओर ले जाता है। मसीह का प्रेम हमारा प्रोत्साहन है।

यह एक अक्षय ईंधन है, जो हमें अप्रिय लोगों से भी प्रेम करने के लिए प्रेरित करता है, और यह प्रेम का सर्वोच्च माप है। दूसरों से प्रेम करने का पैमाना केवल स्वयं के लिए प्रेम नहीं है, बल्कि मसीह का हमारे लिए प्रेम है। हम दूसरों से वैसे ही प्रेम करते हैं जैसे यीशु ने हमसे किया, यानी स्वतंत्र रूप से, बलिदानपूर्वक, निःस्वार्थ भाव से।

यह प्रभु की आज्ञा है, और यदि लोग वास्तव में इस तरह से प्रेम करते हैं, तो यह वास्तव में उन्हें उन लोगों से अलग कर देगा जो मसीह को नहीं जानते हैं। मसीह द्वारा प्रेम किए गए और बचाए गए लोगों के लिए प्रेम अनिवार्य है। दूसरा, दूसरा अंश।

पतरस भाईचारे के प्रेम को महत्व देता है। 1 पतरस 1:22. जब तुम ने सत्य के मानने से अपने आप को शुद्ध किया है, जिस से तुम शुद्ध मन से एक दूसरे से भाईचारे का प्रेम दिखाते हो, तो एक दूसरे से निरन्तर प्रेम रखो।

1 पतरस 1:22. पतरस का मतलब है कि चूँकि उसके पाठकों ने सुसमाचार का पालन किया है, जो एक आदेश है, और मसीह पर उद्धारकर्ता के रूप में भरोसा किया है, जिससे पापों की सफाई का अनुभव हुआ है, इसलिए उन्हें प्रेम प्रदर्शित करना चाहिए। यह फिलाडेल्फिया, या भाईचारे का प्रेम है, जो केवल यहाँ और रोमियों 12:10 में पाया जाता है।

1 थिस्सलुनीकियों 4:9. इब्रानियों 13:1. 2 पतरस 1:7 नए नियम में. यह केवल पाँच स्थानों पर आता है. 1 पतरस 1:22.

रोमियों 12:10. 1 थिस्सलुनीकियों 4:9. इब्रानियों 13:1. 2 पतरस 1:7. फिलाडेल्फिया, भाईचारे का प्यार। यह बताने के बाद कि उसके पाठकों के धर्म परिवर्तन का लक्ष्य प्रेम दिखाना है, पतरस उन्हें एक दूसरे से लगातार प्रेम करने की आज्ञा देता है।

यह एक दूसरे के प्रति अपने प्रेम को गहरा करने और बढ़ाने का आह्वान है। पीटर डेविड्स, जिन्होंने न्यू इंटरनेशनल कमेंट्री इन द न्यू टेस्टामेंट, पृष्ठ 77 में पीटर का पहला पत्र लिखा था, पीटर डेविड्स बताते हैं, "साथी ईसाइयों से प्रेम करना स्पष्ट रूप से कोई मामूली मुद्दा नहीं है, बल्कि हमारे लेखक और पूरे न्यू टेस्टामेंट दोनों की केंद्रीय चिंता है।" इसके अलावा, अगला श्लोक हमें उस शक्ति के बारे में बताता है जो इस प्रेम को सक्षम बनाती है, वह नया जीवन जो परमेश्वर के जीवित और स्थायी वचन के माध्यम से फिर से जन्म लेने से आता है।

1 पतरस 1:23. सच्चे विश्वासी प्रेम में दृढ़ रहते हैं। तीसरा अनुच्छेद जो इसे दर्शाता है।

1 यूहन्ना संतों के लिए प्रेम में बने रहने की आवश्यकता के बारे में स्पष्ट रूप से बताता है। यूहन्ना इसे नकारात्मक और सकारात्मक दोनों शब्दों में प्रस्तुत करता है। नकारात्मक रूप से बोलते हुए, वह लिखता है, " जो प्रेम नहीं करता वह मृत्यु में रहता है। जो कोई अपने भाई या बहन से घृणा करता है, वह हत्यारा है। और तुम जानते हो कि किसी हत्यारे में अनन्त जीवन नहीं रहता।" 1 यूहन्ना 3:14 और 15.

साथी विश्वासियों के लिए प्रेम की कमी एक बुरा संकेत है, जो पुनर्जन्म की कमी का संकेत देता है। इसके अलावा, यूहन्ना पूछता है, उद्घरण, यदि किसी के पास इस संसार की संपत्ति है और वह किसी साथी विश्वासी को ज़रूरत में देखता है, लेकिन उस पर दया नहीं करता, तो परमेश्वर का प्रेम उसमें कैसे निवास कर सकता है? श्लोक 17, 1 यूहन्ना 3:17। यूहन्ना निष्कर्ष देता है, उद्घरण, हे बालकों, हम वचन या वाणी से नहीं, बल्कि कर्म और सत्य से प्रेम करें।

पद 18. बाद के एक अंश में, यूहन्ना ने अभी भी प्रेम की कमी के बारे में चेतावनियाँ दी हैं। पहला यूहन्ना 4, 8. जो प्रेम नहीं करता वह परमेश्वर को नहीं जानता क्योंकि परमेश्वर प्रेम है।

1 यूहन्ना 4:20. यदि कोई कहे कि मैं परमेश्वर से प्रेम रखता हूँ और अपने भाई से बैर रखे, तो वह झूठा है। क्योंकि जो अपने भाई से, जिसे उसने देखा है, प्रेम नहीं रखता, वह परमेश्वर से भी, जिसे उसने नहीं देखा, प्रेम नहीं रख सकता।

1 यूहन्ना 4:20. अब यूहन्ना का उच्चारण सकारात्मक है। प्रिय मित्रों, आइए हम एक दूसरे से प्रेम करें क्योंकि प्रेम परमेश्वर से है और जो कोई प्रेम करता है वह परमेश्वर से जन्मा है और परमेश्वर को जानता है।

4:7. परमेश्वर ने अपने अद्वितीय पुत्र को देहधारी होने, हमसे प्रेम करने, तथा हमारे पापों का प्रायश्चित करने के लिए भेजकर हमारे प्रति अपना प्रेम दिखाया। 1 यूहन्ना 4:10. ई.एस.वी.

एक बार फिर, मसीह का प्रायश्चित प्रेम हमारा उदाहरण है। प्रिय मित्रों, यदि परमेश्वर ने हमसे इस तरह प्रेम किया, तो हमें भी एक दूसरे से प्रेम करना चाहिए। हम प्रेम करते हैं क्योंकि उसने पहले हमसे प्रेम किया, उद्घरण समाप्त।

1 यूहन्ना 4:11 और 19. मसीहियों के लिए प्रेम में बने रहना सिर्फ एक विकल्प नहीं है, बल्कि एक अनिवार्यता है, एक आदेश है। क्योंकि हमें उससे यह आदेश मिला है, मैं उद्धृत कर रहा हूँ, जो परमेश्वर से प्रेम करता है, उसे अपने भाई और बहन से भी प्रेम करना चाहिए।

1 यूहन्ना 4 की आयत 21. हमारे अगले व्याख्यान में, हम संतों की दृढ़ता का अध्ययन करना जारी रखेंगे। शेष विषय को लेते हुए, हमने विश्वास में दृढ़ता और प्रेम में दृढ़ता के बारे में बात की है। हमें बाइबल की इस शिक्षा पर भी चर्चा करनी चाहिए कि विश्वासियों को पवित्रता में दृढ़ रहना चाहिए।

यह डॉ. रॉबर्ट पीटरसन द्वारा मोक्ष पर दिए गए उनके उपदेश हैं। यह सत्र 18, संरक्षण और दृढ़ता, भाग 2, व्यवस्थित सूत्रीकरण है।